Volume : 5 | Issue : 1 | JANUARY 2016 • ISSN No 2277 - 8179

Research Paper

Education

KEYWORDS : विद्यालय–संगठन की प्रकृति, क्षेत्र–स्वतंत्र, क्षेत्र–आधारित, संज्ञानात्मक शैली, व्यक्तित्व प्रकार

विद्यालय–संगठन की प्रकृति के संदर्भ में उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों के व्यक्तित्व प्रकार का अध्ययन

डॉ. मुरलीधर मिश्रा	एसोशिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक, राजस्थान–304022
जया शर्मा	शोध छात्रा, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक, राजस्थान–304022

ABSTRACT

विद्यालय–संगठन की प्रकृति के आधार पर क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों के व्यक्तित्व प्रकार का अध्ययन करने के लिए न्यादर्श में जयपुर जिले में स्थित राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध राजकीय व निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कुल 2859 विद्यार्थियों (राजकीय 1440 एवं निजी 1419) कोयादृच्छिक स्तरीकृत गैर आनुपातिक न्यादर्शन विधि द्वारा लिया गया। स्वनिर्मित एवं प्रमापीकृत 'क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित विद्यार्थी अनुसूची' तथा भार्गव (2000) की 'व्यक्तित्व आयाम प्रमापनी' का प्रयोग करते हुए प्रदत्त संकलित किये गये। 'काई वर्ग' मानों का परिकलन से प्राप्त निष्कर्षों में यह पाया गया कि राजकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों के शंकालु बनाम विश्वसनीय, अवसादग्रस्त बनाम अवसादरहित, दृढ़निश्चयी बनाम विनम्र और भावात्मक अस्थिर बनाम भावात्मक स्थिर व्यक्तित्व प्रकार में सार्थक भिन्नता पायी जाती है तथा सक्रिय बनाम निष्क्रिय एवं उत्सुक बनाम उत्साहहीन व्यक्तित्व प्रकार में सार्थक भिन्नता नहीं पायी जाती है।

कई शिक्षक व अनुसंधानकर्ता इस बात पर अपना ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं कि कक्षा में बालक किस प्रकार सूचनाएँ ग्रहण करता है तथा अलग–अलग तरी. कों से किस प्रकार सीखता है। ये विभिन्न तरीके विद्यार्थियों की भिन्न–भिन्न संज्ञ. ानात्मक शैलियों के रूप में जाने जाते हैं। इन्हीं संज्ञानात्मक शैलियों का एक प्रमुख प्रकार है – क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित संज्ञानात्मक शैली। हॉल (2000) के अनुसार क्षेत्र–स्वतंत्र अधिगमकर्ता तार्किक, प्रतिस्पर्धात्मक, वैयक्तिक, कार्य–केन्द्रित, अंतः अभिप्रेरित, परिकल्पना–परीक्षक, स्वसंगठित, रेखीय तथा विस्तारोन्मुख होता है जबकि क्षेत्र–आधारित अधिगमकर्ता समूह उन्मुख, वैश्विक, सामाजिक, प्रतिक्रियाओं व आलोचनाओं के प्रति संवेदनशील बाह्य अभिप्रेरित, अशाब्दिक तथा कम क्रियाशील होता है जो बाह्य सूचना संगठन को प्राथमिकता देता है। क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों से आशय उन किशोर विद्यार्थियों से है जो अपेक्षाकृत तार्किक कम होते हैं तथा अपने क्षेत्र या अवधारणा को सम्पूर्ण रूप में ग्रहण करते हैं। ऐसे विद्यार्थी परम्प. रानुसार कार्य करने में सहजता महसूस करते हैं तथा इनकी निर्णय क्षमता अन्य व्यक्तियों से प्रभावित होती है। ये विद्यार्थी कार्यरत संगठन से बहुत अधिक प्रभावित होते हैं तथा स्वतंत्र रूप से अपनी पसन्द का विकल्प चुनने में अपेक्षाकृत रूप से कठिनाई अनुभव करते हैं।

ऑलपोर्ट (1948) के अनुसार व्यक्तित्व व्यक्ति के अंतर्गत उन मनोदैहिक व्यवस्थाओं का गतिशील संगठन है जो कि वातावरण के साथ उसके अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता है। भार्गव (2000) ने व्यक्ति के व्यक्तित्व के प्रमुख पक्षों को 6 द्विध्रुवीय कारकों – सक्रिय बनाम निष्क्रिय, उत्सुक बनाम उत्साहहीन, दृढ़निश्चयी बनाम विनम्र, शंकालु बनाम विश्वसनीय, अवसादग्रस्त बनाम अवसादरहित तथा भावात्मक अस्थिर बनाम भ. ावात्मक स्थिर में वर्गीकृत किया। पूर्ववर्ती शोध कार्यों में क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित संज्ञानात्मक शैली तथा व्यक्तित्व कारकों का भिन्न–भिन्न चरों के साथ अध्ययन किया गया है किन्तु विद्यालय–संगठन की प्रकृति के संदर्भ में उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों के व्यक्तित्व प्रकार का अध्ययन भारत या विदेश में सम्पन्न हुए अध्ययनों में प्राप्त नहीं हुआ। अतः शोधकर्ता द्वय ने राजकीय तथा निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों के व्यक्तित्व प्रकार का तुलनात्मक अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस की।

शोध परिकल्पना

विद्यालय–संगठन की प्रकृति (राजकीय व निजी) के आधार पर उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों के व्यक्तित्व प्रकार (व्यक्तित्व के 6 प्रकारों सक्रिय–निष्क्रिय, उत्सुक–उत्साहहीन, दृढ़निश्चयी–विनम्र, –विश्वसनीय, अवसादग्रस्त–अवसादरहित, भावात्मक अस्थिर–भावात्मक स्थिर) में सार्थक भिन्नता के परीक्षण हेतु 6 शोध परिकल्पनाओं को शून्य परिकल्पना में परिवर्तित किया गया।

अध्ययन विधि

विद्यालय–संगठन की प्रकृति के संदर्भ में क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों के व्यक्तित्व प्रकार का अध्ययन यथारथैतिक आधार पर करने हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया।

न्यादर्श प्रविधि

इस अध्ययन न्यादर्श में राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों के राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध राजकीय व निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कुल 2859 विद्यार्थियों (राजकीय 1440 एवं निजी 1419) का चयन विभिन्न स्तरों पर न्यादर्श चयन की यादृच्छिक स्तरीकृत गैर आनुपा. तिक न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया।

शोध उपकरण

शोध अध्ययन के उद्देश्यों के अनुकूल शोधार्थी ने उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित संज्ञानात्मक शैली वरीयताओं को ज्ञात करने हेतु स्वनिर्मित एवं प्रमापीकृत 'क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित विद्यार्थी अनूसूची' तथा व्यक्तित्व प्रकार का अध्ययन करने हेतु भार्गव (2000) द्वारा निर्मित 'व्यक्तित्व आयाम प्रमापनी' का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ एवं प्रदत्तों का विश्लेषण

विद्यालय–संगठन की प्रकृति के संदर्भ में उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों द्वारा प्रदत्त सभी छः व्यक्तित्व प्रकारों के प्रति वरीयताओं का अध्ययन करने हेतु 2*2 की आसंग सारणियाँ निर्मित करते हुए उनके परिकलित काई वर्ग मानों का प्रस्तुतीकरण अग्रांकित सारणी में किया गया है:–

सारणी–1

विद्यालय–संगठन की प्रकृति के आधार पर क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों के व्यक्तित्व प्रकार

क्र.सं.	संगठन की प्रकृति	व्यक्तित्व प्रकार	शैली		काई वर्ग का परिकलित मान
			क्षेत्र–स्वतंत्र	क्षेत्र–आधारित	
1	राजकीय	सक्रिय	418	844	0.025′
		निष्क्रिय	57	112	
	निजी	सक्रिय	349	868	1.921′
		निष्क्रिय	61	120	
2	राजकीय	उत्सुक	412	801	2.072′
		उत्साहहीन	61	150	
	निजी	उत्सुक	336	817	0.116′
		उत्साहहीन	69	159	
3	राजकीय	दृढ़निश्चयी	373	698	4.504′′
		विनम्र	96	240	
	निजी	दृढ़निश्चयी	284	716	2.000′
		विनम्र	123	258	
4	राजकीय	शंकालु	151	363	4.630′′
		विश्वसनीय	312	580	
	निजी	शंकालु	177	392	1.643′
		विश्वसनीय	223	576	
5	राजकीय	अवसादग्रस्त	157	402	10.475′′
		अवसादरहित	312	546	
	निजी	अवसादग्रस्त	173	384	0.937′
		अवसादरहित	238	593	
6	राजकीय	भावात्मक अस्थिर	199	468	6.037′′
		भावात्मक स्थिर	263	467	
	निजी	भावात्मक अस्थिर	191	454	0.073′
		भावात्मक स्थिर	209	513	

मुक्तांश 1 व सार्थकता के 0.05 विश्वास स्तर पर काईवर्ग का सारणी मान = 3.841

'' सार्थक ' सार्थक नहीं

उपर्युक्त सारणी में राजकीय तथा निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों की विभिन्न व्यक्तित्व प्रकारों पर दी गई आवृत्तियों के परिकलित काई वर्ग मानों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि राज. कीय विद्यालयीन विद्यार्थियों के दृढ़निश्चयी बनाम विनम्र, शंकालु बनाम विश्वसनीय,

Volume : 5 | Issue : 1 | JANUARY 2016 • ISSN No 2277 - 8179

अवसादग्रस्त बनाम अवसादरहित तथा भावात्मक अस्थिर बनाम भावात्मक स्थिर व्यक्तित्व प्रकार को छोड़कर अन्य व्यक्तित्व प्रकारों (सक्रिय बनाम निष्क्रिय तथा उत्सुक बनाम उत्साहहीन) तथा निजी विद्यालयीन विद्यार्थियों के सभी व्यक्तित्व प्रकारों के परिकलित काईवर्ग मान मुक्तांश 1 व सार्थकता के 0.05 विश्वास स्तर पर काईवर्ग के सारणी मान से कम हैं। अतः शून्य परिकल्पना "विद्यालय–संगठन की प्रकृति के आधार पर उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों की व्यक्तित्व प्रकार के प्रति वरीयताओं में सार्थक भिन्नता नहीं होती है" को निजी विद्यालयीन विद्यार्थियों के सभी व्यक्तित्व प्रका. रों तथा राजकीय विद्यालयीन विद्यार्थियों के सक्रिय बनाम निष्क्रिय, उत्सुक बनाम उत्साहहीन, व्यक्तित्व प्रकार के लिए स्वीकृत तथा दृढ़निश्चयी बनाम विनम्र, शंकालु बनाम विश्वसनीय, अवसादग्रस्त बनाम अवसादरहित तथा भावात्मक अस्थिर बनाम भावात्मक स्थिर व्यक्तित्व प्रकार के लिए अस्वीकृत किया जाता है। अतः मुख्य शोध परिकल्पना "विद्यालय—संगठन की प्रकृति के आधार पर उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत क्षेत्र–स्वतंत्र एवं क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों की व्यक्तित्व प्रकार के प्रति वरीयताओं में सार्थक भिन्नता होती है" को निजी विद्यालयीन विद्यार्थियों के सभी व्यक्तित्व प्रकारों तथा राजकीय विद्यालयीन विद्यार्थियों के सक्रिय बनाम निष्क्रिय, उत्सुक बनाम उत्साहहीन, व्यक्तित्व प्रकार के लिए अस्वीकृत तथा दृढ़निश्चयी बनाम विनम्र, शंकालु बनाम विश्वसनीय, अवसादग्रस्त बनाम अवसादरहित तथा भावात्मक अस्थिर बनाम भावात्मक स्थिर व्यक्तित्व प्रकार के लिए स्वीकृत किया जाता है। शोध परिकल्पना के परीक्षण से यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यालय–संगठन की प्रकृति के आधार पर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों के दृढ़निश्चयी बनाम विनम्र, शंकालु बनाम विश्वसनीय, अवसादग्रस्त बनाम अवसादरहित तथा भावात्मक अस्थिर बनाम भावात्मक स्थिर व्यक्तित्व प्रकार में सार्थक भिन्नता होती है तथा राजकीय विद्यालयीन विद्यार्थियों के सक्रिय बनाम निष्क्रिय तथा उत्सुक बनाम उत्साहहीन व्यक्तित्व प्रकार तथा निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों के सक्रिय बनाम निष्क्रिय, उत्सुक बनाम उत्साहहीन, दृढ़निश्चयी बनाम विनम्र, शंकालु बनाम विश्वसनीय, अवसादग्रस्त बनाम अवसादरहित तथा भावात्मक अस्थिर बनाम भावात्मक स्थिर व्यक्तित्व प्रकार में सार्थक भिन्नता नहीं होती है।

निष्कर्ष विवेचना एवं शैक्षिक निहितार्थ

उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि राजकीय व निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत अधिकांश विद्यार्थी सक्रिय, उत्साही, क्रियाशील, ऊर्जावान, नियमित, व्यस्त तथा लम्बे समय के लिए एकाग्रता की क्षमता वाले होते हैं। अतः ये क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित विद्यार्थी कार्य को पूर्ण करने में सक्रियता का प्रदर्शन करते हैं। राजकीय व निजी विद्यालयों के विद्यार्थी खुश रहने वाले, नर्म दिल जिंदगी का आनन्द लेने वाले, दूसरों के साथ मिल–जुलकर रहना पसंद करने वाले, सामाजिक तथा बहिर्मुखी प्रवृत्ति वाले होते हैं जो आसानी से दूसरों के साथ घुलमिल जाते हैं। क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित क्षेत्र–आधारित दोनों प्रकार के विद्यार्थी उत्सुकता से भरे होते हैं तथा कार्य करने के लिए प्रेरित होते हैं। ऐसे विद्यार्थी खुले दिल के होते हैं तथा इन विद्यार्थियों में कई प्रकार के कार्य करने की क्षमता होती है। इसी प्रकार राजकीय व निजी विद्यालयों के क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों में उत्सुकता की अधिक प्रवृत्ति प्राप्त हुई है। राजकीय व निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित विद्या. र्थी साहसी, नेतृत्व के गुण वाले, स्वतंत्र प्रवृत्ति के, दूसरों के विचारों से प्रभावित नहीं होने वाले, अन्य लोगों के लिए आदर्श व्यक्तित्व वाले तथा उन्हें मार्गदर्शित करने वाले होते हैं।

राजकीय व निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों ने क्षेत्र–आधारित संज्ञानात्मक शैली को अधिक वरीयता दी है। अतः शैक्षिक नियोजकों, प्राचार्यों व शिक्षकों को इन विद्यार्थियों को बाह्य रूप से परिभाषित लक्ष्य व पुनर्बलन समय–समय पर देते रहना आवश्यक है। विभिन्न शैक्षिक व पाठ्य–सहगामी कार्यक्रमों के माध्यम से इनमें रचनात्मकता का विकास कर दूसरों परिभाषित रहने की प्रवृत्ति को कम करने का प्रयास किया जाना चाहिए। शिक्षकों व अभिभावकों द्वारा ऐसे विद्यार्थियों की सहायता करके, बाह्य पुरस्कारों जैसे स्टार, स्टिकर, ईनाम आदि द्वारा तथा अन्य लोगों द्वारा किए गए कार्यों के प्रदर्शन तथा किए जाने वाले कार्य की रूपरेखा व संरचना उपलब्ध कराकर भी क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों को कार्य के लिए अभिप्रेरणा प्रदान की जा सकती है। साथ ही शैक्षिक नियोजकों, प्राचार्यों, शिक्षकों, अभिभावकों को क्षेत्र–आधारित विद्यार्थियों की आधारितता की प्रवृत्ति कम करके उन्हें स्वयं निर्णय लेने में सक्षम बनाने का प्रयास करना चाहिए तथा क्षेत्र–स्वतंत्र विद्यार्थियों में सामाजिकता की प्रवृत्ति का विकास करके उनकी स्वछंदता की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने का प्रयत्न करना होगा ताकि विद्यार्थियों में दोनों शैलियों के गुण विकसित कर उनके व्यक्तित्व को प्रभावी बनाया जा सके।

एवं अन्य व्यक्तिगत विशिष्टताओं से संबंधित साहित्य इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि किसी भी विद्यार्थी या व्यक्ति के व्यक्तित्व प्रकार में यकायक आमूलचूल परिवर्तन करना संभव नहीं है लेकिन विद्यार्थी वर्ग के हित साधन तथा शैक्षिक जगत की अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए सतत् प्रयास एवं अभ्यास से व्यि. क्तत्व प्रकार तथा गुणों में सुधार व वृद्धि की जा सकती है तथा तात्कालिक क्षेत्र–स्वतंत्र व क्षेत्र–आधारित शैली वरीयताओं की जानकारी का उपयोग शैक्षिक नियोजक व प्राचार्य, शिक्षक, अभिभावक, अध्यापक–शिक्षक, स्वयं विद्यार्थी तथा शोधार्थी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व प्रकार में सुधार हेतु कर सकते हैं।

REFERENCE

ऑलपोर्ट, जी. डब्ल्यू. (1948), पर्सनेलिटी एंड ए साइकोलोजीकल इंटरप्रिटेशन, हेनरी हॉल्ट एंड कम्पनी, न्यूयार्क, 28. भार्गव, महेश (2000); डाइमेंशनल, पर्सनेलिटी इन्वेंटरी, नेशनल साइका. `लॉजिकल कॉरपोरेशन, कचहरी घाट, आगरा. डेशली, जे.ई. (1929); फण्डामेंटल्स ऑफ आब्जेक्टिव साइकोलॉजी, बोस्टन, होगटन, 55. ग्राहम, ए. (2004); टीच योअरसेल्फ स्टेटिस्टिक्स, हूडर एण्ड स्टोग्हटोन, लन्दन. इसक्सेन, स्कॉट, जी., लीएर, जे.केनेथ एवं विलसन, वी. ग्लेन (2003); एन एग्जामिनेशन ऑफ द रिलेशनशिप बिटवीन पर्सनेलिटी टाइप एंड कॉग्नीटिव स्टाइल, क्रियेटिविटी रिसर्च जर्नल, वोल्यूम–15, नं. 4, 2003, 343–354. मैकेलरॉय, जे.सी., हेंड्रिकसन, ए.आर. व टाउनसेंड, ए.एम. (2007); पर्सनेलिटी वर्सेस कॉग्निटीव स्टाइल, एम.आई.एस. क्वार्टरली 2007, मैनेजमेन्ट इनफोर्मेशन सिस्टम रिसर्च सेंटर, यूनिवर्सिटी ऑफ पिनेसोटा. मंगल, एस. के. (2008); शिक्षा मनोविज्ञान, टंडन पब्लिकेशन्स, लुधियाना, 368–369. द्य मघ्सीदी, मोजत्बा (2011); द इंटरएक्शन बिटवीन फील्ड डिपेंडेंट, इनडिपेंडेंट लर्निंग स्टाइल्स एंड लर्नर्स लिंग्वलिटी इन थर्ड लैंग्वेज एक्वेजिशन, यूनिवर्सिटी ऑफ मैसूर at http://www. language in india.com/october 2013/ abdolhoseinineuroticismtests.pdf. पुन्नु, रणदीप (2010); अ स्टडी ऑफ अकेडमिक अचीवमेन्ट इन रिसेशन टू कॉग्निटिव स्टाइल्स पर्सनेलिटी ट्रेंड्स एण्ड एडजस्टमेन्ट ऑफ अडोलसेन्ट्स, शिक्षा विभाग, गुरू नानक देव विश्वविद्यालय, पंजाब.